

गायत्री मंत्र

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

३८

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

श. श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ अस्य श्री दक्षिणा
काल्याः शताक्षरी मन्त्रस्य शतानक म
विमर्धादुद्भूतः श्री दक्षिणा काली देव
ता ह्रीं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं क्लीलकं सु
खे श्वर्या प्रये विनिगः ॥ ह्रीं षडंगदि

का. २
रूपिणी महातपः प्रकाशिनि विषञ्च
चक्र निलये फेनं ह्वयं ह्वयं स्फोरं ह्वयं
वीर्यं ज्ञानं त्रयं स्वाहा ॥
शिरा कालिका शताक्षरी ॥ २

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

गाय

१

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गायत्री कवचम् ॥
ॐ अस्य श्री गायत्री कवच मंत्रस्य प्रजापति
महेश्वर ऋषयोः ॥ अथ जुः सा मा धर्मा रा
श्वदांसि परवत्सल रूपि श्री गायत्री देवता ॐ
तद्दीजं भर्गशक्ति धिर्यः कीलकं गायत्री प्रशा
दसिद्धार्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥
ॐ मुक्ता विदु महेश्वरी नील धवल च्छाये मुखे

श्रीश्वरौ धृत्तामिदु निवद्ध रत्नमु कुंठांतत्वा
 र्थवर्त्तामिर्कमे॥ गायत्रीवरदाभयाकुरा
 धरांशुभ्रं कपालंगुणांशं रत्नचक्र गदार विन्द
 पुगलं हस्तैर्वहन्ती भजे॥१॥ गायत्रीपूर्वतः
 पातु सावित्री पातु दक्षिणी॥ ब्रह्मविद्यातु मे
 श्वातु नगं मे सरस्वती॥२॥ पावकौ मे दिशं रक्षे
 त् पावकौ ज्वलरूपा॥ पातु धानदिशं रक्षे

६३

जाय

२

दि२

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDE - Delhi

घातु घान मय करी ॥३॥ जान मा नै दिशं रखे
पवमान विलाशिनी ॥ से द्रीश मवतु मेरुद्रा
ली रुद्र रुद्रिणी ॥४॥ उर्द्धवला शिमेरुक्षे
दधस्था हृदय वीतथा ॥ एवं दशदिशोरक्षे
सर्वीकं भुवनेश्वरी ॥५॥ तत्पदं पातु मे पादौ जं
घे मे सवितः पदम् ॥ वरुणमिति मे कथ्याना
भर्गस्यैव च ॥६॥ देवस्य मेतुददयं धीमहि
ति गलंतथा धि योष इति मे नमः पदं मेल

Jagannath Bhattarai Collection, Nagajun-7, Kathmandu, Nepal

मोह

रामः

२

लाट क म ॥ ए वं पाँ दि म् ॥ औ नं म्
 औ न मे प्र चो द या त ॥ त का र पा तु म् ॥ धु नं
 स का र पा तु भा ल को ॥ च क्ष पा तु वि का र स्पा
 षो जे र क्षे तु का र क ॥ ता सा पु ठे र्क ॥ र सु रे का
 र सु क पो ल को ॥ ॥ पाँ का र सु त रे षं तु पं का
 र ॥ ध रे ष के त् ॥ आ स्य म ध्ये म का र सु र्गो का
 र ॥ वि तु कं त था ॥ १० ॥ दे का र कं ठ दे श तु वं का र

का ४

स्व ३

गाय

३

स्निग्ध देशकम् ॥ स्पर्शकारो दक्षिणं हस्तं धीका
 रो वामहस्तकम् ॥ ११ ॥ मकारो हृदयं रक्षेद्भुक्ता
 रो जठरं तथा ॥ धिक्कारो नाभिदेशं तु यो कार
 कुरुकं टीतं था ॥ १२ ॥ गुह्यं रक्षुं यो कार उरुनसं
 प्ररक्षतु ॥ प्रकाशे जानुनी रक्षेद्भुक्ता रो जंघ
 देशकम् ॥ १३ ॥ दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः
 पादयुग्मकम् ॥ इदं तु कवचं दिव्यं वाधाश

सामः

३

गाय.

क

तविनाशनम् ॥ १४ ॥ चतुःष्वकीकलाविद्यात
स्वर्गमोक्षैसाधनम् ॥ जपारंभेतुदयं जप
नेकवचं पठेत् ॥ १५ ॥ गोक्षीव्रज्जुधा मित्रदो
गिद्यविलपातकार ॥ मुखते सर्वपापे
भयः परब्रह्माधिगच्छति ॥ १६ ॥ इति श्री
गायत्रिकवचससप्तश्रुम्

८२

व३

शमः

४

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDE- Delhi

गद्यती कवय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal



This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the personal collection of Jagannath Bhattarai ji from Kathmandu, Nepal.

CV:

Jagannath Bhattarai

Date of Birth: 31 December 1960

Place of Birth: Kathmandu, Nepal

Address: Nagarjun (Ramkot), Kathmandu

Educational Qualifications

Bachelor of Science (B.Sc.) – Major in Biology

Master's Degree – Sociology & Anthropology

Shastri (Ongoing) – Balmiki Vidyapeeth

Professional Experience

Government School Teacher (Madhyamik Pratham Shreni)

Taught at Secondary Level (Madhyamik)

Taught at Higher Secondary Level (Uchcha Madhyamik)

Served as Head Teacher

Led academic and administrative development

Strengthened institutional performance and student outcomes

Areas of Interest

Sanskrit Vyakaran

Spiritual & Philosophical Studies

Educational Leadership

Digitization by eGangotri Trust

Funding by MIDE, New Delhi